वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला का पुष्प नं. 255

भगवान महावीर जन्मभूमि-नंद्यावर्त महल

कुण्डलपुर तीर्थ परिचय

(राजगृही, पावापुरी एवं गुणावां परिचय सहित)

-संकलन-

पीठाधीश क्षुल्लक मोतीसागर

भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर में कुण्डलपुर महोत्सव-2004 एवं पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के71वें जन्मोत्सव के अवसर पर प्रकाशित

जम्बूद्वीप, हस्तिनापुर

- प्रकाशक -

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान

जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.

फोन नं.- (01233) 280184, 280236

द्वितीय संस्करण
(परिवर्तित-परिवर्धित)
3300 प्रति

शरदपूर्णिमा
28 अक्टूबर 2004

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान हस्तिनापुर द्वारा संचालित

वीर ज्ञानोदय ग्रंथमाला

इस ग्रन्थमाला में दिगम्बर जैन आर्षमार्ग का पोषण करने वाले हिन्दी संस्कृत, प्राकृत, कन्नड़, मराठी आदि भाषाओं के न्याय, सिद्धान्त अध्यात्म, भूगोल-खगोल, व्याकरण आदि विषयों पर लघु एवं वृहद् ग्रन्थों का मूल एवं अनुवाद सहित प्रकाशन होता है। समय-समय पर धार्मिक लोकोपयोगी लघु पुस्तिकाएं भी प्रकाशित होती रहती हैं।

संस्थापिका एवं प्रेरणास्रोतः-

परम पूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि

श्री ज्ञानमती माताजी

समायोजनः-

प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी

निर्देशनः-

धर्मदिवाकर पीठाधीश क्षुल्लकरत्न श्री मोतीसागर जी

सम्पादकः-

कर्मयोगी ब्र. रवीन्द्र कुमार जैन

(सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन)

कम्पोजिंग-ज्ञानमती नेटवर्क
जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर(मेरठ) उ.प्र.

सम्पादकीय

-ब्र. रवीन्द्र कुमार जैन (अध्यक्ष)

प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव ने आज से कोड़ाकोड़ी सागर वर्ष पूर्व अयोध्या में जन्म धारण किया उसी श्रृंखला में 24वें तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी ने बिहार प्रान्त की कुण्डलपुर नगरी में जन्म लिया था। सैकड़ों वर्षों से कुण्डलपुर में मात्र एक छोटा सा मंदिर था उसका विकास कार्य नहीं हो रहा था अतः जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने 20 फरवरी 2002 को राजधानी दिल्ली से मंगल विहार करके ऋषभदेव तपस्थली प्रयाग-इलाहाबाद में चातुर्मास सम्पन्न किया पुनः विहार करते हुए 29 दिसम्बर 2002 को कुण्डलपुर पधारीं उस दिन भगवान महावीर मंदिर का शिलान्यास हुआ पुनः 7 से 12 फरवरी 2003 को भगवान महावीर जिनबिंब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा सम्पन्न हुई। प्रसन्नता का विषय है कि 1 वर्ष में तीन जिनमंदिर पूर्ण होकर उन पर कलशारोहण 23 फरवरी 2004 को हुआ है। शेष मंदिरों के निर्माण कार्य भी लगभग पूर्ण हो चुके हैं।

इस लघु पुस्तक में मंदिरों के परिचय, तीन चौबीसी भगवन्तों के नाम, कुण्डलपुर में विराजमान सभी भगवन्तों की आरती, राजगृही, पावापुरी, गुणावां तीर्थ के संक्षिप्त परिचय आदि संकलित किए गए हैं जिनके माध्यम से आप सभी तीर्थों की भक्ति का पुण्य प्राप्त करें, यही मंगल कामना है।

दो शब्द

-ब्र. कु. सारिका जैन (संघस्थ)

किसी कवि ने कहा है-

जहाँ पड़े गुरु चरण वहाँ की, रज चन्दन बन जाती है।
मरुथल में भी कल-कल करती, कालिन्दी बह जाती है।।

ये पंक्तियाँ पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के जीवन में पूर्णरूपेण साकार होती हैं। उन्होंने जब भगवान शांतिनाथ, कुंथुनाथ, अरहनाथ की जन्मभूमि हस्तिनापुर में कदम रखे तो आज जम्बूद्वीप रचना आदि अद्वितीय कृतियों के कारण उसे "मानव निर्मित स्वर्ग" कहा जाता है, भगवान ऋषभदेव आदि 5 तीर्थंकरों की जन्मभूमि अयोध्या में जाकर उसे "ऋषभजन्मभूमि" के नाम से विश्व के क्षितिज पर लाकर खड़ा कर दिया, राम-हनुमान आदि 99 करोड़ महामुनियों की निर्वाणभूमि मांगीतुंगी में चिरप्रतीक्षित पंचकल्याणक प्रतिष्ठा के साथ ही "सहस्रकूटकमल" मंदिर का निर्माण कराया तथा भगवान ऋषभदेव की 108 फुट विशालकाय प्रतिमा निर्माण की प्रेरणा के माध्यम से उस तीर्थ से भी जन-जन को परिचित करा दिया। इसी श्रृंखला में "तीरथ विकास क्रम जारी है, अब कुण्डलपुर की बारी है" का नारा देते हुए उन्होंने भगवान महावीर की जन्मभूमि कुण्डलपुर में मंदिरों के निर्माण कराकर संस्कृति की सुरक्षा की है।

ऐसी पूज्य माताजी की प्रेरणा से पूज्य क्षुल्लक श्री मोतीसागर जी महाराज द्वारा संकलित इस लघु पुस्तिका में 16 जन्मभूमियों के नाम, उनकी वंदना आदि के माध्यम से आप सभी तीर्थंकर जन्मभूमियों के महत्त्व को जानें, यही इसकी सार्थकता होगी।

जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी पूज्य गणिनीप्रमुख

आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी का

-:संक्षिप्त-परिचय:-

प्रस्तुति-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चंदनामती

जन्मस्थान – टिकैतनगर (बाराबंकी) उ.प्र.

जन्मतिथि – आसोज सुदी 15 (शरदपूर्णिमा) वि. सं. 1991(सन् 1934)

गृहस्थ का नाम – कु. मैना

माता का नाम – श्रीमती मोहिनी देवी (आर्यिका श्री रत्नमती माताजी)

आजन्म ब्रह्मचर्य एवं गृहत्याग – सन् 1952 में बाराबंकी में शरदपूर्णिमा के दिन आचार्यरत्न श्री देशभूषण जी महाराज से।

क्षुल्लिका दीक्षा – चैत्र कृ. 1, सन् 1953 को श्री महावीरजी (राज.) में।

आर्यिका दीक्षा – वैशाख कृ. 2, सन् 1956 को माधोराजपुरा (जिला-जयपुर) राज. में चारित्रचक्रवर्ती 108 आचार्यश्री शांतिसागर जी की परम्परा के प्रथम पट्टाधीश आचार्य श्री वीरसागर जी के करकमलों से।

कृतित्व – * अष्टसहस्री, समयसार, नियमसार, मूलाचार, कातंत्रव्याकरण, षट्खण्डागम आदि ग्रंथों के अनुवाद/टीकाएं एवं पूजा-विधानों आदि 250 ग्रंथों की लेखिका।

* हस्तिनापुर में जंबूद्वीप, तीनमूर्ति मंदिर, कमल मंदिर, ध्यान मंदिर, ॐ मंदिर आदि के निर्माण की प्रेरिका।
* समवसरण श्रीविहार रथ का सम्पूर्ण भारत में 22 मार्च 1998 से 2002 तक प्रवर्तन।
* 1981, 1982, 1985, 1987, 1992,1993, 1995, 1998 के राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय सेमिनारों की प्रेरिका।
* 4 फरवरी 2000 को भगवान ऋषभदेव अंतर्राष्ट्रीय निर्वाण महामहोत्सव।
* 4 से 8 फरवरी 2001 "तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली प्रयाग" नूतन तीर्थ पर भव्य पंचकल्याणक प्रतिष्ठा एवं महामस्तकाभिषेक।
* ई.सन् 2001 में भगवान महावीर 2600वाँ जन्मकल्याणक महोत्सव के अवसर पर 2600मंत्रों से समन्वित "विश्वशांति महावीर विधान" का लेखन एवं भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा-बिहार) तीर्थ विकास की प्रेरणएवं भगवान महावीर ज्योति रथ का प्रवर्तन।
* वर्तमान में पूज्य माताजी ने "भगवान पार्श्वनाथ तृतीय सहस्राब्दि महोत्सव" पौष कृ. 11, 6 जनवरी 2005 से 1 वर्ष तक मनाने की प्रेरणा सम्पूर्ण जैन समाज को प्रदान की है।

इस प्रकार नित्य नूतन भावनाओं की जननी पूज्य माताजी चिरकाल तक इस वसुधा को सुशोभित करती रहें, यही मंगल कामना है।

अहिंसा के अवतार भगवान महावीर

भगवान ऋषभदेव की तीर्थंकर परम्परा में 24वें तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी ने आज से 2602 वर्ष पूर्व बिहारप्रान्त की कुण्डलपुर नगरी में जन्म लिया। कुण्डलपुर के महाराजा सिद्धार्थ की महारानी त्रिशला थीं। ये वैशाली के राजा चेटक की पुत्री थीं इनका दूसरा नाम प्रियकारिणी था। एक दिन महारानी त्रिशला अपने सात खन के 'नंद्यावर्त महल' में सो रही थीं। रात्रि के पिछले प्रहर में उन्होंने ऐरावत हाथी आदि सोलह स्वप्न देखे। प्रातः पतिदेव से उनका फल "आप तीर्थंकर पुत्र को जन्म देंगी" ऐसा जानकर बहुत प्रसन्न हुईं। आषाढ़ शुक्ला षष्ठी को इन्द्रों ने आकर गर्भकल्याणक महोत्सव मनाया। सौधर्मइन्द्र की आज्ञा से कुबेर ने भगवान के गर्भ में आने के छह महिने पहले से जन्म होने तक (15 महीने तक) माता के आंगन में प्रतिदिन साढ़े सात करोड़ रत्नों की वर्षा की थी।

चैत्र शु. 13 को भगवान महावीर ने जन्म लिया। सौधर्म आदि इन्द्रों ने भगवान का सुमेरूपर्वत पर जन्माभिषेक करके उनके "वीर और वर्धमान" ये दो नाम रखे। एक बार तीर्थंकर शिशु को पालने में झूलते देखकर "संजय-विजय"

नामक दो चारणऋद्धिधारी मुनियों के मन की सूक्ष्म शंका दूर हो गई और उन्होंने उनका 'सन्मति' नामकरण किया।

वे बालक वर्धमान एक बार देव आदि बालकों के साथ कुण्डलपुर के उद्यान में वृक्ष पर चढ़ने-उतरने का खेल खेल रहे थे तभी संगम नामक देव ने भयंकर सर्प का रूप धारण कर उनके धैर्य की परीक्षा लेनी चाही परन्तु वर्धमान का अप्रतिम साहस देखकर उसने अपना असली रूप प्रगट करके उनकी नाना स्तुति करके प्रभु का "महावीर" यह नाम प्रसिद्ध किया।

तीस वर्ष की अवस्था में भगवान महावीर ने राज्य वैभव का त्याग कर मगशिर कृ. 10 को ज्ञातृवन में सालवृक्ष के नीचे जैनेश्वरी दीक्षा धारण की। उन्हें सर्वप्रथम आहारदान देने का सौभाग्य कूल ग्राम के राजा वकुल ने प्राप्त किया। भगवान विहार करते-करते एक बार कौशाम्बी नगरी पधारे वहाँ बेड़ियों में जकड़ी चन्दनबाला ने ज्यों ही भगवान का पड़गाहन किया तत्क्षण ही बेड़ियों से मुक्त होकर उसने नवधा भक्तिपूर्वक आहार दिया।

एक बार भगवान महावीर विहार करके उज्जयिनी नगरी के श्मशान में ध्यानारूढ़ थे। वहाँ एक रूद्र ने उन्हें अनेकों उपसर्गों के द्वारा ध्यान से विचलित करना चाहा परन्तु सफल न हो सका तब उसने उनकी बार-बार भक्ति करके उनका "महति महावीर" नामकरण किया। कहीं-कहीं अतिवीर नाम आता है। 42 वर्ष की उम्र में वैशाख शुक्ला 10 को भगवान को केवलज्ञान प्रगट हुआ परन्तु गणधर के अभाव में 66 दिन तक

उनकी दिव्यध्वनि नहीं खिरी पुनः गौतम गणधर के आने पर श्रावण कृ. 1 को राजगृही के विपुलाचल पर्वत पर उनकी प्रथम देशना खिरी पश्चात् 30 वर्ष बाद कार्तिक कृ. अमावस्या को भगवान महावीर ने पावापुरी के सरोवर से निर्वाणधाम प्राप्त किया। तभी से आज तक दीपावली पर्व मनाया जाता है।

इस प्रकार वीर, वर्धमान आदि पाँच नामों से समन्वित भगवान महावीर की जन्मभूमि कुण्डलपुर में पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा से जिनमंदिरों के निर्माणकार्य द्रुतगति से हुए हैं।

नंद्यावर्त महल परिसर-कुण्डलपुर में नवनिर्मित जिनमंदिरों का परिचय

1. भगवान महावीर जिनमंदिर – तीर्थ का प्रमुख आकर्षण भगवान महावीर का मूलनायक मंदिर है। जो नीचे से ऊपर (शिखर) तक 108 फुट ऊँचाई वाला है। इसमें जमीन से 25 फुट की ऊँचाई पर बने मंदिर के अंदर भगवान महावीर की चमत्कारिक 7 हाथ (साढ़े 10 फुट) खड्गासन प्रतिमा विराजमान है।

उत्तरमुखी इस मंदिर में जाने के लिए नीचे से ऊपर तक 43 सीढ़ियाँ बनी हैं और सामने सड़क से ही सभी जाति के लोग भगवान महावीर के दर्शन कर मनवाञ्छित फल की प्राप्ति करते हैं।

2. भगवान ऋषभदेव जिनमंदिर –महावीर स्वामी के इस जन्मभूमि तीर्थ पर महावीर मंदिर के दाईं ओर प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव की चौदह फुट पद्मासन प्रतिमा इस मंदिर में विराजमान हैं। इनके दर्शन-वंदन करने वालों को युग-युग तक जैनधर्म की प्राचीनता एवं भगवान महावीर से पूर्ववर्ती तीर्थंकरों के इतिहास का परिचय प्राप्त कराने में यह जिनमंदिर निश्चितरूप से सहायक होगा।

3. श्री नवग्रहशांति जिनमंदिर –भगवान महावीर मंदिर के बाईं ओर जैनधर्म के अनुसार भारत में प्रथम बार निर्मित किये गए इस मंदिर में नवग्रहों की शांति करने वाले नव तीर्थंकर भगवन्तों की प्रतिमाएं अलग-अलग कमलों पर विराजमान की गई हैं। शनि, मंगल, गुरु आदि ग्रहों के निवारण हेतु नर-नारी इन भगवन्तों की पूजा-अर्चना करके अपने जीवन में सुख-शांति की प्राप्ति करते हैं।

4. त्रिकाल चौबीसी जिनमंदिर – भारत की धरती पर जन्मे अनंत तीर्थंकरों में से भूतकाल के चौबीस, वर्तमानकाल के चौबीस एवं भविष्यत्काल के चौबीस इस प्रकार त्रिकाल चौबीसी के 72 भगवन्तों से समन्वित यह त्रिकाल चौबीसी जिनमंदिर तीन मंजिल ऊँचा बन चुका है।

जैनधर्म की शाश्वतसत्ता को दर्शाने वाला यह जिनमंदिर महावीर की जन्मभूमि से धर्मसूर्य को सदैव उदित करता रहेगा।

5. नंद्यावर्त महल एवं शांतिनाथ जिनालय– इन्द्रों द्वारा सजाए गए जिस सात मंजिले नंद्यावर्त महल में भगवान महावीर का जन्म हुआ था, उस नंद्यावर्त महल का निर्माण भी तीर्थ परिसर में

हो चुका है। सात मंजिल के स्वरूप को दर्शाने वाले इस महल में कुबेर द्वारा होने वाली रत्नवृष्टि, भगवान महावीर का पालना एवं उनके जीवन से संबंधित विषयों का दिग्दर्शन कराया गया है।

महल के सबसे ऊपर वाली मंजिल में एक जिनालय रहेगा जिसमें भगवान शांतिनाथ, चन्द्रप्रभ एवं पार्श्वनाथ की भव्य प्रतिमाएं विराजमान हो चुकी हैं। इसी महल के नाम पर इस नवविकसित तीर्थस्थल का नाम है– **नंद्यावर्त महल**। भगवान महावीर की जन्मभूमि कुण्डलपुर का विशेष दर्शनीय यह नंद्यावर्त महल युग-युग तक जन-जन का कल्याण करता हुआ महावीर स्वामी का यश दिग्दिगन्तव्यापी फैलाएगा इसमें कोई संदेह नहीं है।

6. भगवान महावीर स्वामी कीर्तिस्तंभ –36 फुट ऊँचे इस कीर्तिस्तंभ का निर्माण पुराने मंदिर परिसर में कराया गया है। इसमें ऊपर दो मंजिलों के चैत्यालयों में भगवान महावीर की 8 प्रतिमाएं विराजमान हैं तथा नीचे की मंजिल में महावीर स्वामी का जीवनचरित्र आदि उत्कीर्ण है। जिनधर्म की कीर्तिपताका को फहराने वाला यह कीर्तिस्तंभ सदैव कुण्डलपुर की यशवृद्धि करता रहेगा।

उपर्युक्त धार्मिक एवं ऐतिहासिक निर्माण के साथ कुण्डलपुर के इस नवविकसित तीर्थ स्थल पर भगवान महावीर की दीक्षामुद्रावाली (पिच्छी-कमण्डलु सहित 6 फुट खड्गासन) प्रतिमा एवं उनके कौशाम्बी में हुए ऐतिहासिक आहार वाली प्रतिमा (महावीर स्वामी की आहार लेते हुए एवं आहार देते हुए सती चन्दना की) स्थापित हैं तथा अतिथि भवन (तीन मंजिली दो धर्मशाला), पानी की टंकी, तीर्थ परिसर का मुख्य द्वार आदि के निर्माण हो चुके हैं।

कुण्डलपुर तीर्थ पर विराजमान त्रिकाल चौबीसी की 72 प्रतिमाओं के नाम

भूतकालीन चौबीसी –

1.श्री निर्वाणनाथ जी 2. श्री सागरनाथ जी 3.श्री महासाधुनाथ जी 4.श्री विमलप्रभनाथ जी 5.श्री श्रीधरनाथ जी 6. श्री सुदत्तनाथ जी 7.श्री अमलप्रभनाथ जी 8.श्री उद्धरनाथ जी 9.श्री अंगिरनाथ जी 10.श्री सन्मतिनाथ जी 11.श्री सिन्धुनाथ जी 12.श्री कुसुमांजलिनाथ जी 13.श्री शिवगणनाथ जी 14.श्री उत्साहनाथ जी 15.श्री ज्ञानेश्वरनाथ जी 16.श्री परमेश्वरनाथ जी 17.श्री विमलेश्वरनाथ जी 18. श्री यशोधरनाथ जी 19.श्री कृष्णमतिनाथ जी 20.श्री ज्ञानमतिनाथ जी 21.श्री शुद्धमतिनाथ जी 22.श्री श्रीभद्रनाथ जी 23.श्री अतिक्रान्तनाथ जी 24.श्री शांतिनाथ जी

वर्तमानकालीन चौबीसी –

1. श्री ऋषभदेव जी 2.श्री अजितनाथ जी 3. श्री संभवनाथ जी 4.श्री अभिनंदननाथ जी 5.श्री सुमतिनाथ जी 6.श्री पद्मप्रभनाथ जी 7.श्री सुपार्श्वनाथ जी 8.श्री चन्द्रप्रभनाथ जी 9.श्री पुष्पदंतनाथ जी 10.श्री शीतलनाथ जी 11.श्री श्रेयांसनाथ जी 12.श्री वासुपूज्यनाथ जी 13.श्री विमलनाथ जी 14.श्री अनन्तनाथ जी 15.श्री धर्मनाथ जी 16.श्री शांतिनाथ जी 17.श्री कुंथुनाथ जी 18.श्री अरहनाथ जी 19.श्री मल्लिनाथ जी 20. श्री मुनिसुव्रतनाथ जी 21.श्री नमिनाथ जी 22. श्री नेमिनाथ जी 23.श्री पार्श्वनाथ जी 24. श्री महावीरस्वामी जी

भविष्यत्कालीन चौबीसी –

1.श्री महापद्मनाथ जी 2.श्री सुरदेवनाथ जी 3.श्री सुपार्श्वनाथ जी
4.श्री स्वयंप्रभनाथ जी 5.श्री सर्वात्मभूतनाथ जी 6.श्री देवपुत्रनाथ जी
7.श्री कुलपुत्रनाथ जी 8.श्री उदंकनाथ जी 9.श्री प्रोष्ठिलनाथ जी
10.श्री जयकीर्तिनाथ जी 11.श्री मुनिसुव्रतनाथ जी 12.श्री अरनाथ जी
13.श्री निष्पापनाथ जी 14.श्री निष्कषायनाथ जी 15.श्री विपुलनाथ जी
16.श्री निर्मलनाथ जी 17.श्री चित्रगुप्तनाथ जी 18.श्री समाधिगुप्तनाथ जी
19.श्री स्वयंभूनाथ जी 20.श्री अनिवर्तकनाथ जी 21.श्री जयनाथ जी
22.श्री विमलनाथ जी 23.श्री देवपालनाथ जी 24.श्री अनंतवीर्यनाथ जी

नवग्रहशांति मंत्र

1. ॐ ह्रीं सूर्यग्रहारिष्टशांतिकराय श्रीपद्मप्रभजिनेंद्राय नमः।
2. ॐ ह्रीं सोमग्रहारिष्टशांतिकराय श्रीचन्द्रप्रभजिनेंद्राय नमः।
3. ॐ ह्रीं मंगलग्रहारिष्टशांतिकराय श्रीवासुपूज्य-जिनेंद्राय नमः।
4. ॐ ह्रीं बुधग्रहारिष्टशांतिकराय श्रीमल्लिनाथजिनेंद्राय नमः।
5. ॐ ह्रीं गुरुग्रहारिष्टशांतिकराय श्रीमहावीरजिनेंद्राय नमः।
6. ॐ ह्रीं शुक्रग्रहारिष्टशांतिकराय श्रीपुष्पदंतनाथजिनेंद्राय नमः।
7. ॐ ह्रीं शनिग्रहारिष्टशांतिकराय श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेंद्राय नमः।
8. ॐ ह्रीं राहुग्रहारिष्टशांतिकराय श्रीनेमिनाथजिनेंद्राय नमः।
9. ॐ ह्रीं केतुग्रहारिष्टशांतिकराय श्रीपार्श्वनाथजिनेंद्राय नमः।

तीर्थंकर जन्मभूमियों के विकास की आवश्यकता —

वर्तमानकालीन 24 तीर्थंकरों की जन्मभूमियाँ जैन संस्कृति की धरोहर हैं एवं धर्म की उद्गमस्थली हैं। उनका विकास व जीर्णोद्धार करना संस्कृति एवं इतिहास का संरक्षण है।

पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी का समस्त दिगम्बर जैन समाज को आह्वान है कि आप सभी लोग मिलकर 24 तीर्थंकरों के महान सर्वोदयी आदर्श एवं उनकी जन्मभूमियों के सुसज्जित स्वरूप को विश्व के समक्ष लावें ताकि भगवान महावीर जैनधर्म के संस्थापक या प्रवर्तक हैं इस गलत प्रचार का निरसन होकर जैनधर्म की प्राचीनता विश्व के समक्ष प्रस्तुत हो सके।

वर्तमानकालीन चौबीस तीर्थंकरों की 16 जन्मभूमियों के नाम इस प्रकार हैं –

1. **अयोध्या (फैजाबाद-उ.प्र.)**– 5 तीर्थंकर– श्री ऋषभदेव भगवान,
श्री अजितनाथ भगवान,
श्री अभिनंदननाथ भगवान,
श्री सुमतिनाथ भगवान,
श्री अनंतनाथ भगवान

2. **श्रावस्ती (बहराइच-उ.प्र.)** – श्री संभवनाथ भगवान
3. **कौशाम्बी (उ.प्र.)** – श्री पद्मप्रभु भगवान
4. **वाराणसी (उ.प्र.)**– श्री सुपार्श्वनाथ भगवान,
श्री पार्श्वनाथ भगवान
5. **चन्द्रपुरी (वाराणसी)** – श्री चन्द्रप्रभु भगवान
6. **काकन्दी (उ.प्र.)** – श्री पुष्पदंतनाथ भगवान
7. **भद्रिकापुरी** – श्री शीतलनाथ भगवान
8. **सिंहपुरी (वाराणसी)** – श्री श्रेयांसनाथ भगवान
9. **चम्पापुरी (भागलपुर-बिहार)** – श्री वासुपूज्यनाथ भगवान
10. **कम्पिलपुरी (फर्रूक्खाबाद-उ.प्र.)**– श्री विमलनाथ भगवान
11. **रत्नपुरी (फैजाबाद-उ.प्र.)** – श्री धर्मनाथ भगवान
12. **हस्तिनापुर (मेरठ-उ.प्र.)**– 3 तीर्थंकर– श्री शांतिनाथ भगवान,
श्री कुन्थुनाथ भगवान,
श्री अरनाथ भगवान
13. **मिथिलापुरी**– श्री मल्लिनाथ भगवान,
श्री नमिनाथ भगवान
14. **राजगृही (नालंदा-बिहार)** – श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान
15. **शौरीपुर (बटेश्वर-उ.प्र.)** – श्री नेमिनाथ भगवान
16. **कुण्डलपुर (नालंदा-बिहार)** – श्री महावीर भगवान

भगवान मुनिसुव्रतनाथ जन्मभूमि

राजगृही तीर्थ परिचय

बीसवें तीर्थंकर भगवान मुनिसुव्रतनाथ के जन्म से पवित्र 'राजगृही' नगर बिहार प्रान्त के नालंदा जिले में स्थित है। भगवान मुनिसुव्रतनाथ ने राजगृही के राजा सुमित्र की महारानी सोमा की पवित्र कुक्षि से वैशाख कृ. 12 के दिन जन्म लिया। इनके गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान इन चार कल्याणकों से पावन राजगृही तीर्थ प्रसिद्ध है। जीवंधर कुमार, विद्युच्चर, गंधमालन आदि अनेक महामुनियों ने इसी राजगृही नगरी में पंचपहाड़ी से विख्यात विपुलाचल, ऋषिगिरि आदि पर्वतों से घातिया-अघातिया कर्मों का नाशकर मोक्ष प्राप्त किया है, जिसके कारण यह तीर्थक्षेत्र के साथ ही सिद्धक्षेत्र भी माना जाता है। इसी नगरी के विपुलाचल पर्वत पर भगवान महावीर स्वामी की प्रथम दिव्यध्वनि श्रावण कृ. एकम को खिरी थी।

ऐसी अनेकों पौराणिक घटनाओं से परिपूर्ण इस नगरी में पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा से दिसम्बर 2003 में भगवान मुनिसुव्रतनाथ की सवा बारह फुट ऊँची खड्गासन प्रतिमा विराजमान हुई हैं तथा विपुलाचल पर्वत पर निर्मित हॉल में वीरशासन जयंती (14 जुलाई 2003) के दिन ''ह्रीँ'' की प्रतिमा विराजमान की गई हैं तथा विपुलाचल पर्वत की तलहटी में गौतमस्वामी के मानभंग के प्रतीक में एक उत्तुंग मानस्तंभ का निर्माण भी किया गया है।

इस धार्मिक व ऐतिहासिक पावनभूमि राजगृही को शत-शत नमन।

भगवान महावीर निर्वाणभूमि

पावापुरी सिद्धक्षेत्र परिचय

भगवान महावीर स्वामी के निर्वाणगमन से पावन पावापुरी सिद्धक्षेत्र बिहारप्रान्त के नालंदा जिले में स्थित है। आज से 2530 वर्ष पूर्व पावापुरी के मनोहर नामक उद्यान में कमलों से व्याप्त सरोवर के मध्य मणिमयी शिला पर भगवान विराजमान हुए, उस समय समवसरण विघटित हो चुका था। दो दिन तक ध्यान में लीन हुए महावीर स्वामी ने कार्तिक कृष्णा अमावस के दिन प्रातः उषाकाल के समय शुक्लध्यान के द्वारा सर्वकर्मनाशकर निर्वाण प्राप्त कर लिया। उस समय देवों ने देदीप्यमान दीपकों की पंक्ति से पावापुर नगरी को सब ओर से जगमगा दिया था। तभी से आज तक संसार के प्राणी इस भरत क्षेत्र में प्रतिवर्ष कार्तिक कृ. अमावस्या को दीपावली पर्व मनाने लगे।

भगवान महावीर के निर्वाण के दिन ही सायंकाल में उनके प्रथम गणधर श्री गौतम स्वामी को भी पावापुर में ही केवलज्ञान की प्राप्ति हुई थी।

वर्तमान में पावापुर नगरी में जलमंदिर के निकट स्थित पांडुकशिला परिसर में पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा से भगवान महावीर स्वामी की खड्गासन प्रतिमा (दिसम्बर 2003 में) स्थापित की गई हैं।

उस सिद्धभूमि पावापुरी को मेरा अनन्त-अनन्त बार नमस्कार होवे।

श्री गौतम स्वामी निर्वाणभूमि

गुणावां सिद्धक्षेत्र परिचय

आज से 2561 वर्ष पूर्व भगवान स्वामी को दिव्य केवलज्ञान की प्राप्ति हुई, धनकुबेर ने आकाश में अधर समवसरण की रचना कर दी, परन्तु 65 दिन व्यतीत हो गए, प्रभु महावीर की दिव्यध्वनि नहीं खिरी। तब सौधर्मेन्द्र ने उपाय सोचा और गौतम नामक एक ब्राह्मण को समवसरण में ले आए। चूँकि उन गौतम ब्राह्मण को अपने ज्ञान का अत्यधिक मद था परन्तु मानस्तंभ को देखते ही उनका मान गलित हो गया और उन्होंने अपने पाँच सौ शिष्यों के साथ समवसरण में जाकर भगवान महावीर की "जयति भगवान्.....आदि सुन्दर श्लोकों से स्तुति की तथा जैनेश्वरी दीक्षा लेकर भगवान महावीर का शिष्यत्व स्वीकार किया। इतना होते ही भगवान की दिव्यध्वनि खिरने लगी, वह दिन श्रावण कृ. 1 का था।

ऐसे उन गौतम को क्रम-क्रम से धर्माराधना करते हुए भगवान महावीर के निर्वाणदिवस केवलज्ञान की प्राप्ति हुई पुनः बारह वर्ष पश्चात् बिहारप्रान्त के गुणावां क्षेत्र से निर्वाण पद की प्राप्ति हुई और यह क्षेत्र सिद्धक्षेत्र के रूप में प्रसिद्ध हो गया। इस तीर्थ पर पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा से श्री गौतम गणधर स्वामी की सवा पाँच फुट खड्गासन प्रतिमा सितम्बर 2004 में विराजमान की गई हैं।

ऐसे गुणावां जी पावन सिद्धक्षेत्र को मेरा बारम्बार नमन।

तीर्थंकर जन्मभूमि तीर्थ वंदना

रचयित्री-आर्यिका चन्दनामती

शेर छन्द–

जय जय जिनेन्द्र जन्मभूमियाँ प्रधान हैं।
जय जय जिनेन्द्र धर्म की महिमा महान है।।
जय जय सुरेन्द्रवंद्य ये धरा पवित्र हैं।
जय जय नरेन्द्र वंद्य ये तीरथ प्रसिद्ध हैं।।1।।

मिश्री से जैसे अन्न में मिठास आती है।
वैसे ही पवित्रात्मा तीरथ बनाती हैं।।
हो गर्भ जन्म दीक्षा व ज्ञान जहाँ पर।
वे तीर्थ कहे जाते हैं आज धरा पर।।2।।

जिनवर जनम से पहले वहाँ इन्द्र आते हैं।
नगरी को सुसज्जित कर उत्सव मनाते हैं।।
सुंदर महल सजाया जाता है वहाँ पर।
जिनवर के पिता-माता रहते हैं वहाँ पर।।3।।

पहली जनमभूमि है नगरि तीर्थ अयोध्या।
शाश्वत जनमभूमी प्रभू की कीर्ति अयोध्या।।

इस युग में किन्तु पाँच जिनेश्वर वहाँ जन्मे।
वृषभाजित अभीनंदन सुमति अनंत वे।।4।।

श्रावस्ती ने संभव जिनेन्द्र को जनम दिया।
कौशाम्बी में श्रीपद्मप्रभू ने जनम लिया।।
वाराणसी सुपार्श्व पार्श्व से पवित्र है।
श्रीचन्द्रपुरी चन्द्रप्रभू से प्रसिद्ध है।।5।।

काकन्दी को सौभाग्य मिला पुष्पदंत का।
है भद्रपुरी जन्मस्थल शीतल जिनेन्द्र का।।
श्रेयाँसनाथ से पवित्र सारनाथ है।
जिनशास्त्रों में जो सिंहपुरी से विख्यात है।।6।।

श्रीवासुपूज्य जन्मभूमि चम्पापुरी है।
कम्पिल जी विमलनाथ जिनकी जन्मस्थली है।।
तीरथ रतनपुरी है धर्मनाथ की भूमी।
रौनाही से प्रसिद्ध है वह आज भी भूमी।।7।।

श्रीशांति कुंथु अरहनाथ हस्तिनापुर में।
जन्मे जिनेन्द्र तीनों त्रयलोक भी हरषे।।
मिथिलापुरी में मल्लि व नमिनाथ जी जन्मे।
तीर्थेश मुनिसुव्रत जी राजगृही में।।8।।

है जन्मभूमि शौरीपुर नेमिनाथ की।
महावीर से कुण्डलपुरी नगरी सनाथ थी।।
चौबीस जिनवरों की जन्मभूमि को नमूँ।
कर बार-बार वंदना सार्थक जनम करूँ।।9।।

श्री ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा मिली।
कई जन्मभूमियों में नई ज्योति तब जली।।
उन प्रेरणा से जन्मभूमि वन्दना रची।
प्रभु जन्मभूमि तीर्थों की भक्ति मन बसी।।10।।

प्रभु बार-बार मैं जगत में जन्म ना धरूँ।
इक बार जन्मधार बस जीवन सफल करूँ।।
इस भाव से ही जन्मभूमि वन्दना करूँ।
निज भाव तीर्थ प्राप्ति की अभ्यर्थना करूँ।।11।।

यह भक्तिसुमन थाल है गुणमाल का प्रभु जी।
अर्पण करूँ है भावना यात्रा करूँ सभी।।
बस ''चन्दनामती'' की इक आश है यही।
संयम की ही परिपूर्णता जीवन की हो निधी।।12।।

भगवान महावीर स्वामी की
मंगल आरती

रचयित्री-आर्यिका चन्दनामती

तर्ज-(नागिन धुन.....)

जय वीरप्रभो, महावीर प्रभो, की मंगल दीप प्रजाल के
मैं आज उतारूँआरतिया।। टेक.।।

सुदी छट्ठ आषाढ़ प्रभू जी, त्रिशला के उर आए।
पन्द्रह महिने तक कुबेर ने, बहुत रत्न बरसाये।।प्रभू जी.।।
कुण्डलपुर की, जनता हर्षी, प्रभु गर्भागम कल्याण पे,
मैं आज उतारूँ आरतिया।।1।।

धन्य हुई कुण्डलपुर नगरी, जन्म जहां प्रभु लीना।
चैत सुदी तेरस के दिन वहां, इन्द्र महोत्सव कीना।।प्रभू जी.।।
थे नाथवंश, के भूषण तुम, बस एक मात्र अवतार थे,
मैं आज उतारूँ आरतिया।।2।।
यौवन में दीक्षा धारणकर, राजपाट सब त्यागा।
मगसिर असित मनोहर दशमी, मोह अंधेरा भागा।।प्रभू जी.।।

बन बालयती, त्रैलोक्यपती, चल दिये मुक्ति के द्वार पे,
मैं आज उतारूँ आरतिया।।3।।

शुक्ल दशमि वैशाख में तुमको, केवलज्ञान हुआ था।
गौतम गणधर ने आ तुमको, गुरु स्वीकार किया था। प्रभू जी.।।
तब दिव्यध्वनी, सब जग ने सुनी, तुमको माना भगवान है,
मैं आज उतारूँ आरतिया।।4।।

पावापुरि सरवर में तुमने, योग निरोध किया था।
कार्तिक कृष्ण अमावस के दिन, मोक्ष प्रवेश किया था।। प्रभू जी.।
निर्वाण हुआ, कल्याण हुआ, दीपोत्सव हुआ संसार में,
मैं आज उतारूँ आरतिया।।5।।

वर्धमान सन्मति अतिवीरा, मुझको ऐसा वर दो।
कहे 'चन्दनामती' हृदय में, ज्ञान की ज्योती भर दो।। प्रभू जी.।।
अतिशयकारी, मंगलकारी, ये कल्पवृक्ष भगवान हैं,
मैं आज उतारूँ आरतिया।।6।।

श्री ऋषभदेव भगवान की आरती

तर्ज –जयति जय.....

जयति जय जय आदि जिनवर, जयति जय वृषभेश्वरं।
जयति जय घृतदीप भरकर, लाए नाथ जिनेश्वरं।। टेक.।।
गर्भ के छह मास पहले से रतनवृष्टी हुई।
तेरे उपदेशों से प्रभु, जग में नई सृष्टी हुई।।
मात मरुदेवी पिता श्री नाभिराय के जिनवरं।
जयति जय जय आदि जिनवर, जयति जय वृषभेश्वरं।।1।।
जन्मभूमि नगरि अयोध्या, त्याग भूमि प्रयाग है।
शिव गए कैलाशगिरि से तीर्थ ये विख्यात है।।
पंचकल्याणकपती पुरुदेव देव महेश्वरं।
जयति जय जय आदि जिनवर, जयति जय वृषभेश्वरं।।2।।
तुमसे जो निधियां मिलीं, वे इस धरा पर छा गईं।
नर में ही नहिं नारियों के, भी हृदय में समा गईं।।
मात ब्राह्मी-सुन्दरी के पूज्य पितु जगदीश्वरं।
जयति जय जय आदि जिनवर, जयति जय वृषभेश्वरं।।3।।
तेरी आरति से प्रभो, आरत जगत का दूर हो।
''चन्दनामति'' रत्नत्रय निधि, मेरे मन में पूर्ण हो।।
ज्ञान की गंगा बहे आशीष दो परमेश्वरं।
जयति जय जय आदि जिनवर, जयति जय वृषभेश्वरं।।4।।

श्री शांतिनाथ भगवान की आरती

आरति करो रे,
श्री शान्तिनाथ सोलहवें जिनकी आरति करो रे।
प्रभु आरति से सब जन का, मिथ्यात्व तिमिर नश जाता है।
भव भव के कल्मष धुलकर, सम्यक्त्व उजाला आता है।
आरति करो, आरति करो, आरति करो रे,
श्री मोहमहामदनाशक प्रभु की आरति करो।।
श्री शान्तिनाथ सोलहवें जिनकी आरति करो रे।।।1।।
प्रभु ने जन्म लिया जब भू पर, नरकों में भी शांति मिली।
ऐरा देवी के आंगन में, आनंद की इक लहर चली।।
आरति करो, आरति करो, आरति करो रे,
जय विश्वसेन के प्रिय नन्दन की आरति करो रे।।
श्री शान्तिनाथ सोलहवें जिनकी आरति करो रे।।।2।।
शान्तिनाथ निज चक्र रत्न से, षट्खंडाधिपति बने।
इस वैभव में शांति न लखकर, रत्नत्रय के धनी बने।
आरति करो, आरति करो, आरति करो रे,
श्री शान्तिनाथ पंचम चक्री की आरति करो रे।।
श्री शान्तिनाथ सोलहवें जिनकी आरति करो रे।।।3।।
जो प्रभु के दरबार में आता, इच्छित फल को पाता है।
आत्मशक्ति को विकसित कर, 'चंदनामती' शिव पाता है।
आरति करो, आरति करो, आरति करो रे,
मुक्तिश्री के अधिनाथ की आरति करो रे।।
श्री शान्तिनाथ सोलहवें जिनकी आरति करो रे।।।4।।

नवग्रह भगवान की आरती

तर्ज –चाँद मेरे आ जा रे.....

आरती नवग्रह स्वामी की-2
ग्रह शांति हेतू तीर्थंकरों की, सब मिल करो आरतिया।।टेक.।।

आत्मा के संग अनादी, से कर्मबंध माना है।
उस कर्मबंध को तजकर, परमातम पद पाना है।
आरती नवग्रह स्वामी की।।1।।

निज दोष शांत कर जिनवर, तीर्थंकर बन जाते हैं।
तब ही परग्रहनाशन में, वे सक्षम कहलाते हैं।
आरती नवग्रह स्वामी की।।2।।

जो नवग्रह शांती पूजन, को भक्ति सहित करते हैं।
उनके आर्थिक, शारीरिक, सब रोग स्वयं टरते हैं।
आरती नवग्रह स्वामी की।।3।।

कंचन का दीप जलाकर, हम आरति करने आए।
''चन्दनामती'' मुझ मन में, कुछ ज्ञानज्योति जल जाए।।
आरती नवग्रह स्वामी की।।4।।

त्रिकाल चौबीसी की आरती

आरति करो रे,
श्री त्रैकालिक चौबीसी जिन की आरति करो रे।
भूतकाल के चौबिस जिनवर, तीर्थ अयोध्या में जन्मे।
पुनः राज्य वैभव को तजकर, नग्न दिगम्बर मुनी बने।।
आरती करो, आरती करो, आरती करो रे,
केवलज्ञानी तीर्थंकर जिन की आरति करो रे।।1।।
वर्तमान की चौबीसी में, पाँच अयोध्या में जन्में।
शेष सभी तीर्थंकर अलग, अलग स्थानों में जन्में।।
आरती करो, आरती करो, आरती करो रे,
उन सब जिनवर की जन्मभूमि की आरति करो रे।।2।।
भावि काल के सब जिनवर, साकेतपुरी में जन्मेंगे।
धनकुबेर तब रत्नवृष्टि से, नगरी पावन कर देंगे।।
आरती करो, आरती करो, आरती करो रे,
महापद्म आदि चौबीसों जिन की आरति करो रे।।3।।
त्रैकालिक चौबीसी की, प्रतिमाएँ सभी बहत्तर हैं।
धर्मतीर्थ बतलाने से, इनको कहते तीर्थंकर हैं।।
आरती करो, आरती करो, आरती करो रे,
चेतन व अचेतन सब तीरथ की आरति करो रे।।4।।
तीनों सन्ध्याओं में जो, जिनवर की आरति करते हैं।
वही ''चन्दनामती'' जगत में, तीन रत्न को वरते हैं।।
आरती करो, आरती करो, आरती करो रे,
रत्नत्रय संयुत सब जिनवर की आरति करो रे।।5।।

राजगृही तीर्थ की आरती

रचयित्री–ब्र. कु. सारिका जैन (संघस्थ)

आरति करो रे,
श्री राजगृही पावन तीरथ की, आरति करो रे।
इस तीरथ पर तीर्थंकर श्री,
मुनिसुव्रत ने जन्म लिया।
अपनी त्याग तपस्या से,
इसके हर कण को धन्य किया।।
आरति करो, आरति करो, आरति करो रे,
माता सोमा के प्रिय नन्दन की, आरति करो रे।।1।।

गर्भ - जन्म - तप - ज्ञान चार,
कल्याणक हुए इसी भू पर।
पितु सुमित्र ने जीवन धन्य,
किया तीर्थंकर सुत पाकर।।
आरति करो, आरति करो, आरति करो रे,
इन्द्रों से पूजित नगरी की, आरति करो रे।।2।।

समवसरण महावीर प्रभू का,
आया विपुलाचल नग पर।
छ्यासठ दिन के बाद प्रथम,
देशना खिरी इस ही गिरि पर।।
आरति करो, आरति करो, आरति करो रे,
श्री इन्द्रभूति गौतम गणधर की आरति करो रे।।3।।

समवसरण का दर्शन करने,
चला भक्ति से मेंढक एक।
गज के पैरों से दबकर वह,
हुआ उसी क्षण स्वर्ग में देव।।
आरति करो, आरति करो, आरति करो रे,
चमत्कारमय इस भूमी की, आरति करो रे।।4।।

इस ही पावन तीरथ पर,
गणिनी माँ ज्ञानमती जी ने।
मुनिसुव्रत की खड्गासन,
प्रतिमा स्थापित कर दी है।।
आरति करो, आरति करो, आरति करो रे,
"सारिका" सभी मिल भक्ती से, आरति करो रे।।5।।

भगवान महावीर निर्वाणभूमि

पावापुरी तीर्थ की आरती

करों आरती वर्द्धमान की, पावापुर निरवान थान की।।टेक.।।
राग-बिना सब जगजन तारे, द्वेष बिना सब कर्म विदारे।।
करों आरती वर्द्धमान की, पावापुर निरवान थान की।।1।।
शीलधुरंधर शिवतिय भोगी, मनवचकाय न कहिये योगी।।
करों आरती वर्द्धमान की, पावापुर निरवान थान की।।2।।
रत्नत्रय निधि परिग्रह-हारी, ज्ञान सुधा भोजन व्रत धारी।।
करों आरती वर्द्धमान की, पावापुर निरवान थान की।।3।।
लोक अलोक व्यापे निजमाहीं, सुखमय इन्द्रिय सुखदुख नाहीं।।
करों आरती वर्द्धमान की, पावापुर निरवान थान की।।4।।
पंचकल्याणक पूज्य विरागी, विमल दिगम्बर अम्बर त्यागी।।
करों आरती वर्द्धमान की, पावापुर निरवान थान की।।5।।
गुनमनि-भूषन भूषित स्वामी, जगत उदास जगन्तर स्वामी।।
करों आरती वर्द्धमान की, पावापुर निरवान थान की।।6।।
कहै कहाँ लौ तुम सब जानौं, 'द्यानत' की अभिलाष प्रमानौ।।
करों आरती वर्द्धमान की, पावापुर निरवान थान की।।7।।

गुणावां से निर्वाण प्राप्त

श्री गौतम गणधर की आरती

तर्ज –तन डोले.....

जय जय ऋषिवर, गौतमगणधर, की मंगल दीप प्रजाल के,
मैं आज उतारूं आरतिया।।टेक.।।

तीन न्यून नव कोटि मुनीश्वर, ढाई द्वीप में होते।
घोर तपस्या के द्वारा, निज कर्म कालिमा धोते।।
गुरू जी.....
गणधर भी हैं, श्रुतधर भी हैं, इन मुनियों में सरताज वे,
मैं आज उतारूँ आरतिया।।1।।

वृषभसेन से गौतम तक हैं, तीर्थंकर के गणधर।
सबने ही कैवल्य प्राप्त कर, पाया पद परमेश्वर।।
गुरू जी.....
प्रभु दिव्यध्वनि, सुन करके मुनी, करते निज पर कल्याण हैं,
मैं आज उतारूं आरतिया।।2।।

गणधर के अतिरिक्त तपस्वी, मुनि भी ऋद्धी पाते।
उनको नमकर नर नारी के, रोग शोक नश जाते।।
गुरू जी.....
अणिमा, महिमा, लघिमा, गरिमा इत्यादि ऋद्धियाँ प्राप्त हैं,
मैं आज उतारूँ आरतिया।।3।।
ऋद्धि प्राप्त मुनि निज ऋद्धी का, लाभ स्वयं नहीं लेते
अपनी ऋद्धी के द्वारा वे, सबका हित कर देते।।
गुरू जी.....
तप वृद्धि करें, मुनि ऋद्धि वरें, फिर बने सिद्धि के नाथ वे,
मैं आज उतारूँ आरतिया।।4।।

श्री गौतम गणधर वन्दन में, निज वन्दन भी करना है।
क्योंकि "चन्दनामती" मुझे भी, इक दिन शिव वरना है।।
गुरू जी.....
ज्ञानी ध्यानी, श्रुत विज्ञानी, गुरु को वन्दन शत बार है,
मैं आज उतारूँ आरतिया।।5।।

कुण्डलपुर तीर्थ वंदना

–प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

जो भवसमुद्र से तिरवाता, वह तीर्थ कहा जाता जग में।
वह द्रव्य तीर्थ औ भावतीर्थ, दो रूप कहा जिन आगम में।।
तीर्थंकर के जन्मादिक से, पावन हैं द्रव्यतीर्थ सच में।
हर प्राणी की आत्मा परमात्मा भावतीर्थ मानी जग में।।1।।
सतयुग में चौबिस तीर्थंकर, जन्में जब इस पृथिवी तल पर।
इन्द्राज्ञा से तब धनकुबेर ने, रत्नवृष्टि कर दिया सुखद।।
उन सब तीर्थंकर भगवन्तों की, जन्मभूमि को नमन करूँ।
फिर महावीर की जन्मभूमि, कुण्डलपुर तीरथ को प्रणमूँ।।2।।
धवला तिलोयपण्णत्ति आदि, प्राचीन ग्रंथ अध्ययन किया।
उनमें कुण्डलपुर के राजा, सिद्धार्थ का शासन कथन मिला।।
वे नंद्यावर्त महल में रानी, त्रिशला के संग रहते थे।
छब्बिस सौ वर्षों पूर्व जहाँ पर, रत्न असंख्य बरसते थे।।3।।
तिथि चैत्र सुदी तेरस के दिन, वहाँ महावीर का जन्म हुआ।
माता त्रिशला के साथ-साथ, पूरा कुण्डलपुर धन्य हुआ।।
वह नगरी काल थपेड़ो से, वीरान हुई थी कलियुग में।
लेकिन फिर से आ गया समय, छब्बीससौंवें जन्मोत्सव में।।4।।

श्री गणिनीप्रमुख ज्ञानमति माताजी की सम्प्रेरणा मिली।
प्रभु महावीर की जन्मभूमि, कुण्डलपुर में नव ज्योति जली।।
कुण्डलपुर के प्राचीन जिनालय, का कुछ जीर्णोद्धार हुआ।
कीर्तिस्तंभ के निर्माण से प्रभु-इतिहास वहाँ साकार हुआ।।5।।
इक नंद्यावर्त महल परिसर में, स्वर्ग उतर आया मानो।
प्रभु वीर का युग स्मरण हुआ, अतिशय साक्षात् इसे जानो।।
यहाँ मुख्य द्वार से विश्वशांति, महावीर जिनालय दिखता है।
अतएव सभी भक्तों का मन, ऊपर जाने को करता है।।6।।
महावीर प्रभू की जय बोलो, फिर चालिस सीढ़ी पार करो।
अंतर का दीप जलाकर प्रभु, चालीसा का फल प्राप्त करो।।
यहाँ प्रतिमा अवगाहन प्रमाण, महावीर प्रभू की खड्गासना
उस दुग्ध सदृश उज्ज्वल प्रतिमा के, दर्शन से हो मन प्रसन्न।।7।।
इक शतक आठ फुट ऊँचे इस, मंदिर का है अतिशय भारी।
उत्तुंग शिखर में भी जिनवर, प्रतिमाएँ शोभ रहीं प्यारी।।
प्रभु की प्रदक्षिणा कर उनका, अभिषेक व पूजन पाठ करो।
कुण्डलपुर अवतारी त्रिशलानंदन, आरति का ठाठ करो।।8।।
प्रभु नाम मंत्र जपते-जपते, सीढ़ी उतरो आगे को चलो।
फिर प्रदक्षिणा क्रम से तीर्थंकर, ऋषभदेव के द्वार चलो।।
इस मंदिर में वृषभेश्वर की, चौदह फुट पद्मासन प्रतिमा।
इनका दर्शन करके जानो, जिनधर्म की है शाश्वत महिमा।।9।।

आगे चलकर नवग्रह शांती, जिनमंदिर के दर्शन कर लो।
नव कमलों पर वहाँ राज रहे, नव जिनवर को वंदन कर लो।।
जिस ग्रह का हो तुम पर प्रकोप, उस ग्रहनाशक प्रभु को भज लो।
पूजन विधान औ जाप्य आदि के, द्वारा ग्रह शांती कर लो।।10।।
इस मंदिर के ही निकट विशाल, जिनालय तीन मंजिला है।
त्रैकालिक चौबीसी मंदिर के, नाम से इसकी गरिमा है।।
सबसे नीचे इस मंदिर में हैं, भूतकाल की प्रतिमाएँ।
फिर वर्तमान व भविष्यत् की, क्रमशः ऊपर जिनप्रतिमाएँ।।11।।
तीनों मंजिल में चौबिस चौबिस, प्रतिमाओं को नमन करो।
आगे खुद भी तीर्थंकर बनने, हेतु पुण्य को ग्रहण करो।।
देखो इस मंदिर के समक्ष है, नंद्यावर्त महल सुन्दर।
छब्बिस सौ वर्षों बाद पुनः, इतिहास दिखाया है अन्दर।।12।।
कैसे-प्रभु वीर जन्म से पहले, इन्द्र यहाँ पर आते थे।
तब माता त्रिशला के आंगन में, धनद रत्न बरसाते थे।।
इन्द्रों ने आकर इसी महल में, प्रभु का जन्म कल्याण किया।
अन्दर जाकर देखो इन दृश्यों, का कैसा निर्माण हुआ।।13।।
इस महल के अन्दर महावीर के, जीवन के कुछ दृश्य दिखे।
सिद्धार्थ राज का सिंहासन, रानी त्रिशला का पलंग दिखे।।

देखो जो दो चारण मुनिवर, निःशंक हुए थे प्रभु ढिग आ।
दोनों ने अतिशय खुश होकर, जिनशिशु को सन्मति नाम दिया।।14।।
इन मुनियों को कर नमन महल के, सभी दृश्य देखो रुचि से।
फिर सबसे ऊपर शांतिनाथ, चैत्यालय दर्श करो मन से।।
है तीन लोक आकार एक, वहाँ ऊपर सिद्धशिला देखो।
हैं सिद्ध अनंतानंत जहाँ उस, सिद्धलोक को नमन करो।।15।।
इस तरह तीर्थ कुण्डलपुर के, दर्शन कर मन संतुष्ट हुआ।
अतिशायी नंद्यावर्त महल, देखा तो हृदय प्रफुल्ल हुआ।।
जिस नगरी का कण-कण मस्तक पर, धारण करने योग्य कहा।
वह जन्म सफल करने वाला, तीरथ जन-जन से पूज्य महा।।16।।
निज जन्म सफल करना हो तो, प्रभु जन्मभूमि को नमन करो।
यदि कर्म सुखद करना हो तो, तीर्थंकर को स्मरण करो।।
ऐसी ही पावन धरती पर, प्रभुवर! हो कभी जनम मेरा।
बन सकूँ अजन्मा कभी अगर, तो समझूँ पूर्ण भ्रमण मेरा।।17।।
तीर्थंकर श्री महावीर प्रभू, मंगलकारी हों जगभर में।
उनकी अतिशायी जन्मभूमि, कुण्डलपुर को हर भक्त नमे।।
नवनिर्मित सभी जिनालय, कुण्डलपुर के मंगलमय होवें।
''चंदनामती'' प्रभु दर्शन से, मेरा भी जन्म सफल होवे।।18।।